B.M.A COLLEGE , BAHERI,DARBHANGA

(A CONSTITUENT UNIT OF LNMU)

BA DEGREE-1

HISTORY HONS.

PAPER-1

UNIT-2(II)

DEPARTMENT OF HISTORY

PANKAJ KUMAR MISHRA

DATE-05/10/2020

TOPIC:- छठी सदी ई०पू० का काल (बुद्धकाल/ महाजनपद काल)

PERIOD OF SIXTH CENTURY B.C

PART-3

Scanned with CamScanner

छठी सदी ई० पू० का काल, भाग-3
(बुद्ध काल / महाजनपद काल)

बुद्धकालीन सामाजिक दशा

वर्णव्यवस्था - बुद्धकालीन आर्थिक संरचना ने तात्कालीन सामाजिक ढाँचे को भी प्रभावित किया। इस काल में वर्णव्यवस्था का सीधा संबंध जन्म से हो गया। सभी वर्णों के दायित्व व कर्तव्यों का परिभाषित किया गया। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र। यह इस बात का संकेत है कि समाज में प्रथम स्थान को लेकर ब्राह्मण एवं क्षत्रिय में तनाव रहा होगा। इस समय समाज में गृहपति के रूप में एक समृद्ध एवं धनाढ्य वर्ग सामने आया। इन गृहपतियों एवं वैश्यों के आर्थिक महत्व को समझकर बुद्ध ने भी इन्हें पर्याप्त महत्व दिया।

स्त्रियों की दशा — इस काल में स्त्रियों की दशा में गिरावट आई। उनके सामाजिक, शैक्षणिक अधिकारों में कमी आ गई। बौद्ध साहित्य के अनुसार बुद्ध स्वयं स्त्रियों के संघ में प्रवेश के विरोधी थे। समाज में गणिकाओं का अस्तित्व था एवं उन्हें सम्मानित जीवन प्राप्त था। आम्रपाली को बुद्ध ने स्वयं दीक्षित किया था। समाज में सगोत्र विवाह होते थे। शाक्य अपनी ही कुल में अपनी कन्याओं का विवाह करते थे।

स्त्री अब पतिव्रता के रूप में महत्वपूर्ण हो गई। इसका कारण यह था कि पैतृक वंश प्रणाली के तहत संपत्ति एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को मिलता है। अतः परपुरुष गमन की प्रवृत्ति को रोकना जरूरी था इसलिए पैतृक सगोत्रता की प्रणाली में वैध उत्तराधिकार सुनिश्चित करने के लिए पत्नी का पतिव्रता होना अति आवश्यक था।

दास प्रथा :- इस काल में दास प्रथा प्रचलन में रही। दासों के प्रयोग के स्वरूप में परिवर्तन आया। अब दासों का प्रयोग न सिर्फ घरेलू कार्यों में किया जाता था बल्कि आर्थिक उत्पादन में भी किया जाने लगा। यह एक महत्वपूर्ण संरचनात्मक परिवर्तन था। अब दास, शिल्प, कृषि कर्म, व्यापार वाणिज्य इत्यादि में लगाए गए। इस प्रक्रिया ने श्रम विभाजन को प्रोत्साहित किया तथा समाज में शोषक शोषित संबंधों का विकास हुआ। समाज में अस्पृश्यता भी विद्यमान रही।

इस प्रकार बुद्धकालीन सामाजिक-आर्थिक स्थितियों ने इस काल के नवीन धर्मों के उदय में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

बुद्धकालीन धार्मिक दशा

600 B.C में जहाँ एक तरफ साम्राज्यवाद का उदय हो रहा था ठीक उसी समय अनेक नए धार्मिक संप्रदायों का उदय भी हो रहा था। इस समय के नवीन धर्मों ने पुरातन धार्मिक व्यवस्था को चुनौती दी। वस्तुतः इस काल में न सिर्फ भारत में बल्कि विश्व के अन्य भागों में पुरातन धार्मिक मान्यताओं को चुनौती दी गई। यही वह काल जब चीन में

Scanned with CamScanner

कन्फ्यूशियस और लाओत्से, ईरान में जरथ्रुष्ट और यूनान में पाइथोगोरस यही कार्य कर रहे थे जो भारत में बुद्ध और महावीर

05/10/2020

Scanned with CamScanner